ISWK SHARING KNOWLEDGE

Class IX

Subject- Hindi Second Language

Topic-

संवाद लेखन {Dialogue Writing}

By- आचार्य सुशील शर्मा

©ISWK

संवाद लेखन

--------विषय – एक दृष्टि में------

विषयवस्तु - 2
संवादों की सटीकता - 2
भाषा - 1
कुल अंक = 5

संवाद लेखन

साहित्य की अन्य विधाओं की तरह संवाद लेखन एक महत्त्वपूर्ण विधा है। साहित्य की लगभग सभी विधाओं में संवाद की उपयोगिता होती है।

वह कहानी हो या उपन्यास, इनकी विषय-वस्तु का आधार प्राय: संवाद ही होते हैं। संवाद दो या दो से अधिक व्यक्तियों के मध्य की गई बातचीत या वार्तालाप हैं।

संवाद लेखन एक कला है, जिसमें निरंतर अभ्यास से निपुणता प्राप्त की जा सकती है। नाटक और एकांकी संवादों से ही बनते हैं।

- संवादों की भाषा अत्यंत सरल, सुबोध, सुग्राह्य और स्वाभाविक होनी चाहिए ।
- विषय से सम्बंधित सरस और रोचक संवाद आकर्षक होते हैं ।
- संवादों में आत्मीयता लाने के लिए उचित संबोधनों का प्रयोग किया जाना चाहिए ।
- पात्रों के विचार, हाव–भाव तथा विभिन्न मुद्राओं आदि को कोष्ठक में लिखना चाहिए ।

- संवादों का अनावश्यक विस्तार तथा औपचारिकता अपेक्षित नहीं है ।
- संवाद लेखन में उचित विराम-चिह्नों का प्रयोग अनिवार्य है ।
- कथावस्तु की आधार-भूमि तथा पात्रों की पृष्ठभूमि, उनकी शिक्षा और स्वभाव को ध्यान में रखते हुए संवाद लेखन किया जाना चाहिए ।
- कहानियों तथा प्रसंगों को संवाद में बदला जा सकता है ।

संवाद लेखन

के

कुछ उहाहरण

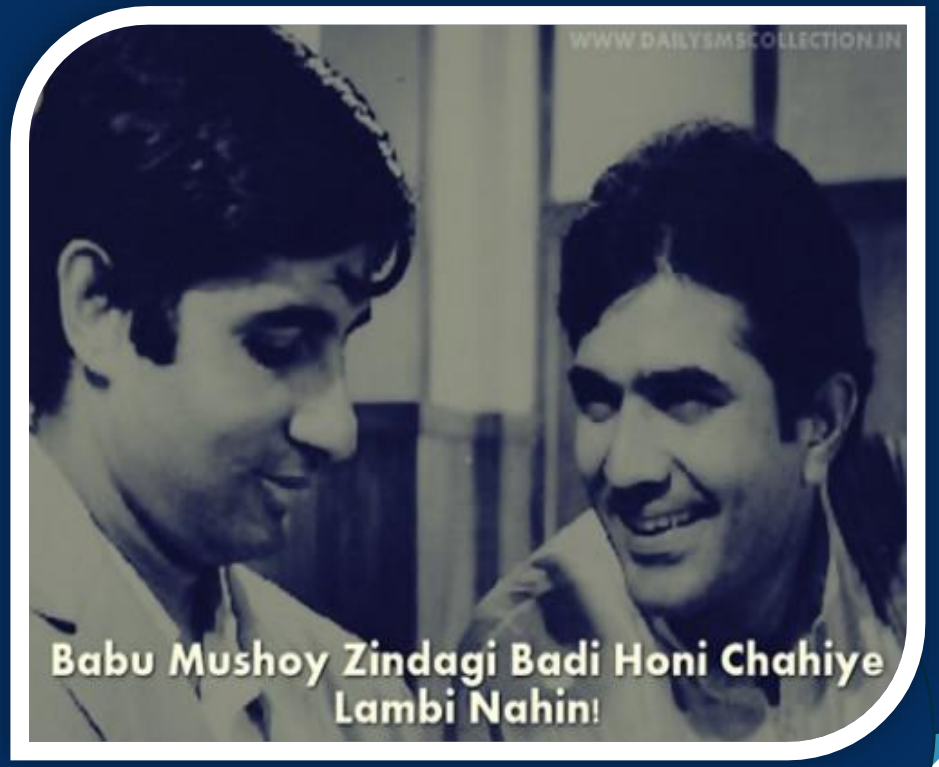

प्रश्न- किसी एक विषय पर 50 – 60 शब्दों में सारगर्भित संवाद लिखिए ।

यात्री और बस चालक के बीच हुआ संवाद

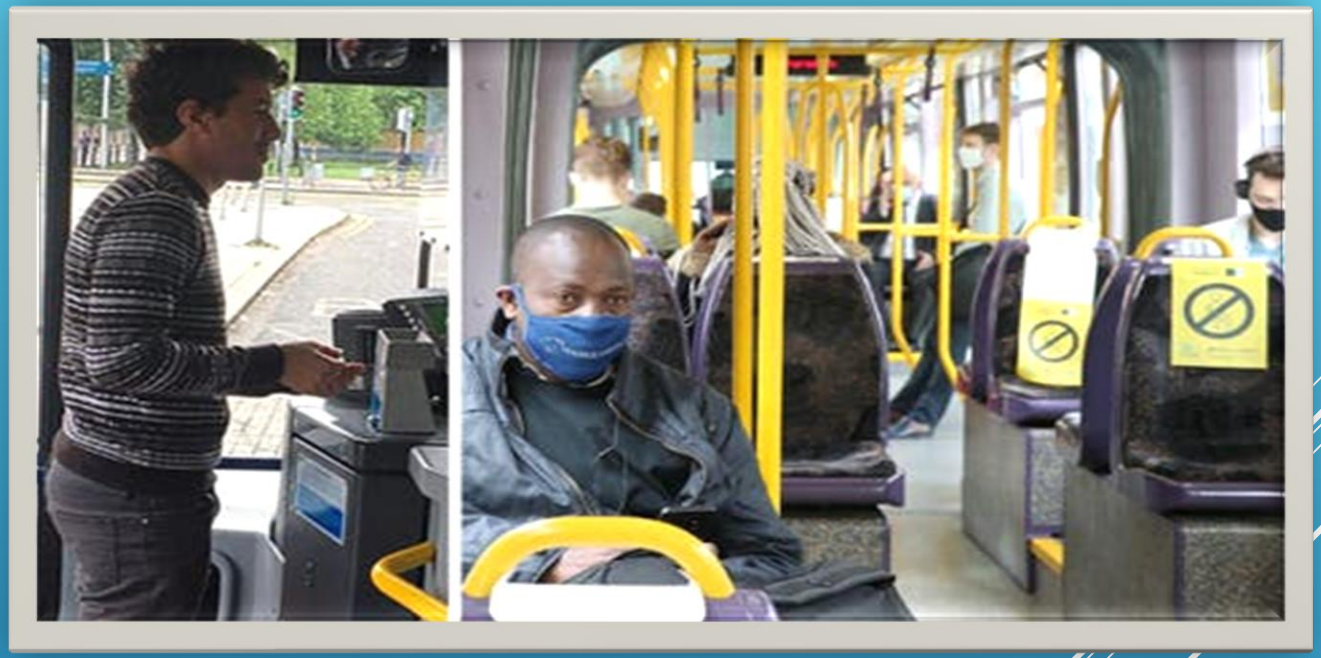

यात्री – भाई । बस कितने बजे चलेगी ?

चालक – साढ़े पाँच बजे ।

यात्री – लेकिन साढ़े पाँच तो बज गए हैं, फिर देरी क्यों ?

चालक – बस चलने वाली है ।

यात्री – आजकल बसों के चलने का कोई समय नहीं है । ये आपकी इच्छा से चलती हैं ।

चालक – आप बिना वजह ही मुझसे बहस कर रहे हैं । हमारी बसों का समय है और हम उसी के अनुसार चलते हैं ।

पुरुषों तथा स्त्रियों के बीच जल संकट से सम्बंधित संवाद

पहला पुरुष – (सिर हिला कर) पानी अभी तक नहीं आया | क्या होगा प्रभु !
पहली स्त्री – राजा के आदमी कहते हैं कि पीने का पानी ख़त्म होने को है |

दूसरा पुरुष – और खेती को सींचने वाली नहरें भी तो सूख गई हैं |
दूसरी स्त्री – ताल ही सूख गया तो नहरें कैसे चलेंगी ?
पहला पुरुष – नहरें नहीं चलेंगी तो खेत सूख जाएँगे |

दूसरा पुरुष – ताल हैं तो नहरें हैं |
पहली स्त्री – नहरें हैं तो खेत हैं | खेत हैं तो अन्न है |
पहला पुरुष – ताल है तो बिजली है | बिजली है तो कारखाने हैं |
दूसरा पुरुष – न खेत, न कारखाने |

दूसरी स्त्री – न पानी, न बिजली |
पहली स्त्री – इसका मतलब भूख- प्यास |
पहला पुरुष – इसका मतलब मौत |

(सब एक – दूसरे को देखते हैं, फिर एक साथ बोलते हैं |)
सब – तालाबों के सूखने का मतलब है मौत हम सबको खा जाएगी |
हम सब मर जायेंगे |

मेघा और निशा सहपाठी हैं । अंतिम परीक्षा के दिन दोनों वार्ता कर रही हैं ।

मेघा – निशा ! कैसी हो ? तुम्हारे पेपर कैसे हुए ?

निशा – यह तो परिणाम ही बताएगा ।

मेघा – मैं तुमसे परिणाम नहीं, मैं तो यह पूछ रही हूँ कि पेपर कैसे हुए ?

निशा – गणित तो अच्छा हुआ पर विज्ञान में भौतिकी का एक प्रश्न छूट गया । और तुम्हारे कैसे हुए ?

मेघा – मेरे तो अच्छे हुए हैं । गणित और विज्ञान में तो मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ । परन्तु इनके परिणाम का मुझे भरोसा नहीं रहता ।

निशा – हाँ, सही कह रही हो । कभी – कभी परिणाम एकदम विपरीत आते हैं । शायद इसी का नाम परीक्षा रख छोड़ा है ।

मेघा – शायद ! अच्छा चलती हूँ ।

निशा – हाँ, चलो, फिर मिलेंगे ।

दूरदर्शन के कार्यक्रमों की गुणवत्ता पर पिता-पुत्री का संवाद ।

पिता – आजकल दूरदर्शन पर कार्यक्रमों की होड़ में अच्छे – बुरे का ध्यान नहीं रह गया है ।

पुत्री - हाँ पिताजी ! ऐसा ही है, पर कुछ अच्छे भी हैं ।

पिता – हो सकता है ।

पुत्री - पिताजी ! कुछ कार्यक्रम ज्ञानवर्ध्दक भी आते हैं पर फिल्मी कार्यकर्मों की तो बाढ़–सी आ गई है ।

पिता – इन फिल्मी कार्यकर्मों के कारण ही लाखों-करोड़ों विद्यार्थियों को हानि हो रही है ।

पुत्री - यह तो सच है ।

पिता – मेरे विचार से ऐसे कार्यक्रम बनने चाहिए जिनसे विद्यार्थियों का भला हो ।

पुत्री - हाँ पिताजी अगर ऐसे कार्यक्रम बने तो निश्चित ही विद्यार्थियों का भला होगा ।

आयुश और भावेश नवीं कक्षा में पढ़ते हैं मार्च की परीक्षाएँ चल रही हैं। इधर भारत–पाक क्रिकेट शृंखला का अंतिम मैच है। दोनों मैच देखना चाहते हैं, परंतु पढ़ाई के दबाव से भी डरते हैं। उनमें हुई वार्ता की कल्पना कीजिए और लिखिए।

आयुश- भावेश ! आज शृंखला का अंतिम मैच है। देखेगा ?

भावेश- और छोड़ूँगा क्या ? अवश्य देखूँगा।

आयुश- यार टीमें तो दोनों धुआँधार हैं। मज़ा आएगा।

भावेश- हाँ ! आजकल तो विराट भी पूरी फार्म में है और अश्विन भी।
उसकी फिरकी एक बार चल जाए तो पाँच-छः खिलाड़ी गए समझो।

आयुश- वैसे, भारत की टीम इस बार काफी संतुलित और मजबूत है।

भावेश- हाँ यार, भारतीय टीम का जवाब नहीं।

आयुश- इस बार हमारी जीतने की सम्भावना बहुत प्रबल है।

भावेश- हाँ, सो तो है, अच्छा चलता हूँ, फिर मिलते हैं।

{दोनों जाते हैं}

धन्यवाद